

DH259

संस्कृत-विद्यापीठ-मुद्रा

१५

नागतेजनकवृद्धकृत तथागतमहायुजाभयार्कनादिभाक्तसूत्रव्याजलीसमाधियसितालि
कृत्वलिकवाधुमार्गलुमिदायमितायायकाभत्यसंगुदवकुमेलीकजलामुदितापकाव
लविबिकृपुत्रवदावर्चिदिकुपकोनेवाः॥नयथा॥वज्रगईनयनामवाधिसत्यनामहासत्य २
नायजनेनयवावजगपुनयवावजमतिनायावजसहनेनयवावजनागायननयवावजविक
र्षितनयवावजकटनयवावजगसिंनायावजहुलनयवावजाह्वनयवावजजलयवावजसने

नयवजकटनायनामवाधिसत्यननासत्यन।प्रवसुमवेचनवसीतासीवाधिसत्यकाटीमिर
तथातसहमेःसार्धः।सजसुतेअमहागावकेअदंनहदि।कोलागुवेय।देन्नरुवसयाजनेः।स
मगमहासुमिभूकचिके॥सविमश्रापुहेनचित्तसमाधिवसप्रतिहार्यविकर्षनमहास्यमप्रापित
तज्जकनदलिरि॥सद्यदियनमममिद्वयसंक्रजवाहनायीजेः।यइनामवयप्रमात्र।आमह
नीपुणल।आमप्रमात्रपूहूमेगीयनीपुणल।आयमानावकहिलन।आयुषमात्रसूरुतिना

आयुष्मानाय नमः । आयुष्मानाय नमः ॥ आयुष्मानाय नमः ॥ आयुष्मानाय नमः ॥ आयुष्मानाय नमः ॥
 काशपन । आयुष्मानाय नमः ॥ ७४ ॥ सुमुखे सखे हले शुभमहा शुभके ताह । महः ॥
 दधयु सुमुखे सखे सखे सखे ॥ शुद्धा वासकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥
 दधयु सुमुखे ॥ सूर्यमकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥ निर्माला नमः ॥
 पत्रिनिमित्तव सखे सखे सखे ॥ शुद्धा वासकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥

नमः सखे सखे । शुद्धा वासकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥ ७५ ॥ सुमुखे सखे सखे सखे ॥
 नमः ॥ सागजन नमः सागजन नमः ॥ शुद्धा वासकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥
 नमः सखे सखे सखे सखे ॥ ७६ ॥ सुमुखे सखे सखे सखे ॥ शुद्धा वासकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥
 नमः सखे सखे सखे सखे ॥ ७७ ॥ सुमुखे सखे सखे सखे ॥ शुद्धा वासकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥
 नमः सखे सखे सखे सखे ॥ ७८ ॥ सुमुखे सखे सखे सखे ॥ शुद्धा वासकाय के दधयु सुमुखे सखे सखे ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

द्वयं च यथा विनिवर्तितं न द्वा विंशति मन्त्राः परं यत्नं कृत्वा च नृणां यथा ज्ञानं कृतं गमयिष्यामः
अनक वज्र अक्षय वि काह लुक् या दयो ० स्युति वि न । अनक वज्र अक्षय मक जम् शोको नः
आदि न म क्का य मी नि य द्वा ग लुक् क १ श क य ज अक्षय म् का के द्वि ती जा ल क ल क ६ आ नो दि न
अनक वज्र अक्षय प म क लुक् का वि ल ग क ह न न म् दु ती म म हा नि ल पू षे ग म ज सि द्वा ला य राः
वि न स म क्का य मी नि क १ अनक वज्र अक्षय स ला जा वि न् वि ना द्वा य म् का टी नि य न् अ न सः

द्वयं कृतं यथापि कृतं । अनक क स्याद्वा प्राप्य आदि न वि ल ग ॥ स म्भवा तु वज्र अक्षय प्राप्ति
निवर्त्त ४ या का य न प म जा ज २ व लुक् का ला न् स य स ह मी ति अ क प स म्भु स वि ना जि न लुः
मि ल ग म स प रि प १ य ल २ य स ह मी क पि य द १ ना म हा क स्या द्वा क २ व य द्वा ध र्मा १ सं क
स मि ना ध र्मा द ल य ति स या म्भु ती क ला ल म थ क स्या लं प ये य स न क स्या लं स थ स य १ अ न
क व स प मि प र्त्त प रि १ २ प यो य व य म्भु य ये स य्वा का ज य ति स ॥ २ य व ल र्ग ग व म्भु

हाइ प्रजापतिम हव्यः ॥ सर्वसा लल गला रुसा मथाना माग कापे का ॥ अब या नवम सा न जा
 न वस्य वमहाइ का ॥ निहं प्रजा कतिषा निप्रति सता थज क ह्वे न वृद्धा पर्व वसा दसा नाये वा
 द धाम सा वला ॥ मास की रु क टी ये वता त्र द वोत थ द्वा सी व ज स कु क लया ॥ अना महा ख तात
 पो वव धम हा का ली ये दू हा व ज दू हा न थ व र्ज जा धम पा सी व ज पा सी ये व ज पा नि म हा य ना
 व ज ना ला म हा ये प्रां ग ये वा म ग दू म लि ॥ अपरा जि ना म हा व दी का ल क न्नी म हा व ला ॥ न म थ

नाम हा ल ग म प म क लु ले प्र व य पृ ष्ठ द नी म नि वृ ज ह न् क ली य पि ज्ज ता ॥ म हा न जा न थ व दी
 ध न्ना य वि य स्या नि नी ॥ जा क स्रे क ज ग्टी ये व व हा कि नि के ना य का ॥ का पा नि नी म हा ला ग म थः
 न्ना लं क व जी न थ ॥ अ न्ना य व द वा वि या ॥ स लानू य द का प्रि थि काः ॥ न स्र ज क्का क वि षा
 नि य स वि या क म नि ना ॥ हा मि नी या धि क ॥ ये व स रि य ना दू ट द नि नी ॥ श्री दे वी स व नी ये व न त्रं
 कानि स क नू ग ॥ म हा य नि स ज म ना या मी ॥ अ ज य न स द ॥ सर्व सि ॥ हे ल व ल स्या ॥ पू गु र्ग सा व नि

एवमस्यैव गतिं वदन् सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी। यथा धर्मः सूर्यस्यैव गतिं तद्वत्पापं नमः ॥ १ ॥
यत्नयन्त वात्रिहं धनं धनं ॥ पुत्रं वदन् ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ २ ॥
सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ ३ ॥
वदन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ ४ ॥
धर्मं सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ ५ ॥

१०

पुत्रं धर्मं सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ ६ ॥
धर्मं सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ ७ ॥
सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ ८ ॥
धर्मं सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ ९ ॥
सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ अर्धं यत्नयन्तः सूर्यस्यैव गतिं गच्छिनी ॥ १० ॥

[illegible]

۱۱

[illegible]

[illegible][illegible]

सुगंधप्रवृत्तयश्च २२ गवति समसर्वदा सर्वरूपं ॥ सर्वोपपत्त्यं ॥ सर्वदूषणरूपलीला
 ॥ सर्वकलिकलहविशुद्धविबोद्ध ॥ रूपप्रद्वितिली मङ्गलपापविश्रान्ति। सर्वयक्तो
 कसनामविद्वितिलीचलरपलचलवतवतजयकुसर्वप्रसक्तान्सिध्दकुसमन्त्रयमाली ॥ १३
 विद्यात्रसाध्यमनुसंधाद्यविद्यानू। जयस्तिष्ठस्तिष्ठयुद्ध। ॥ २५॥ २५॥ २५॥ २५॥ २५॥
 समस्तशक्तिसर्वविद्यादिनेमलेजयारुत्रिजयकत्रिजयवतितिव २२ गवति समसमन्त्रयानः

म सर्वत आगत रुदय शुद्ध द्योता क य म म स प त्रि वा गं सर्व सत्या ज्ञा व म दादा नून र य य स
 र्व साम्य त्रि प ज य ग्रा य र्ण नो म हा ल या ता भा स त र प स त र ह र्वा य न वि ॥ ५ ॥ ध नि । स म ना का ज म
 ७ त वि शु द्ध । वि ग त र वि म त म ल ॥ सर्व म ल वि ॥ ५ ॥ ध नि । स र्व म र्ज त वि शु द्ध । सर्व म र्ज त वि
 ॥ ५ ॥ ध नि । वि लि र स र्व वा य वि शु द्ध । म ल वि ग त । ज य य नि । त ज य नि । तै ता क्का धि वि नि
 र्वा दा या सर्व त आ ग त म् र्वा वि वि क र्वा दा । सर्व र्वा वि नि क र्वा दा । सर्व त आ ग त रु द य शु द्ध

[illegible][illegible]

कालाशलायिषु हि सुविचिकामलिप्रहृष्टा दयाप्राजितनामदाय ह्यति कर्तुं स र्थं
सिद्धिं कृमागलममनालिपानंगुफत्रस्य ॥ निर्मलतदाजानामि ॥ नैत्रां लोचिन् ॥
जिह्वला ह्यिन्विषादकत्रतयकं भजिक्रमाकृत्यमा नानु र्वपदाजित रु वासि धाजिनी
न नरवत्पुनः सप्तमनतस्यापमयांनषदिमहात्रा मयः सविपतिनी रुत्सनिषस्थि नमः ॥
तु रगवात्महात्रा मयः सप्तमनतस्यापमयांनषदिमहात्रा मयः सविपतिनी रुत्सनिषस्थि नमः ॥

१५

हमवाममात्रे एमहात्रा मयः सप्तमनतस्यापमयांनषदिमहात्रा मयः सविपतिनी रुत्सनिषस्थि नमः ॥
यस्यापुनत्रिये हृदयगता ह विषादिमहात्रा मयः सप्तमनतस्यापमयांनषदिमहात्रा मयः सविपतिनी रुत्सनिषस्थि नमः ॥
यदुमिषादिमहात्रा मयः सप्तमनतस्यापमयांनषदिमहात्रा मयः सविपतिनी रुत्सनिषस्थि नमः ॥
गता नरुत्सनिषस्थि नमः ॥ यस्यापुनत्रिये हृदयगता ह विषादिमहात्रा मयः सप्तमनतस्यापमयांनषदिमहात्रा मयः सविपतिनी रुत्सनिषस्थि नमः ॥
यादुमिषादिमहात्रा मयः सप्तमनतस्यापमयांनषदिमहात्रा मयः सविपतिनी रुत्सनिषस्थि नमः ॥

मिमांसेया इ मापव (अपिपुत्र महाविद्याददयगनाकात्रयतिम ॥ यथविधिचदवृत्तमिति ।
अपिच महा द्वाक्राण किमितिज्ञानमिति । कामालस्यां सहातगयां नृपूषेना नृविचयमानायाजवृत्त
दहं इति संस्था कृत्वा । तस्याप्रतिमिं मि कायचलय कृत्वा जावतु यद्वा वय कायं स वृत्त वाजी गयी ॥ १२
अहानगम्यति वा विना सयितु माजहु शाक नाजा द्वा वृत्त दहं स्यात्तयेति ॥ १३
कुलं नगजपदं न किं नृयत् नृयं दपायं कृत्वा मयमे वृत्तयय वृत्त न स्यात् ॥ अथाह कारव

नारदमु अस्मि स म महापुति सजा नम महाविद्याया क्लीय नादं मि सच वृत्त वल कायं पत्राजि
षामि । रुग्मी कत्रषामि । अथमात्मा शमिज सा पुन लप स्या रूमा किमिदं महा ताज ना ह्मा रि कदा
चिदपि पुन मि ते ॥ माज पाद ॥ अहमिदानी पुन कृदं न कत्रिषामि । अथ सजा जाव वृत्त दहं
नागजा क कन स्या तमिज शा सु वि य मय पाद ॥ इ माहापुति सजा महाविद्याया क्लीय यथविधि नासि
लित्र ॥ का । म । १२ वम्य च नृम प्रयम हा पुने सजा न महाविद्याया क्ली कयं कृत्वा स ह्मा स ॥ १३ । नीयत

॥ काकिने वसुधा सा च कुज कुल कायः ॥ गजिन आमर्दिनः चेतो वदो वदुः प्रलंग्गकः ॥ शनि कृ
 तलो वल चक्राजामुक्ताः ॥ शनि ॥ ॥ अवेहिमहा वासः ॥ पुण्ड्रकमहानूरा ययं महाविद्यानाङ्गी स चेतन
 गमद्वयम् अशिष्टितापुण्ड्रकमहानूरा ययं महाविद्यानाङ्गी स चेतन ॥ २०
 शिभसुसमयशस्यायुक्तं ॥ मन्त्रयुक्तं मन्त्रां पतीतलगाभानां पतिनः स चेतन ॥ अगनसुत्यानामर्थयति
 नायसुरोयन्दुवृत्ताः ॥ यः कश्चिन्महावाक्कुलः ॥ मन्त्रां महापुनिसत्राप्रमहाविद्यानाङ्गी ययं अशिष्टितादिभिः

त्वायाहो कलुषा अत्राशेषातिहसर्जनं गगाधिपेता यदि न यथासर्वं अगनकायः ॥ ति वदिनयः ॥ सर्वे न
 अगनधनुर्गर्हवदिनयः ॥ सर्वे न अगनननु वदिनयः ॥ कालिनाभिः ॥ सतीतः ॥ ति वदिनयः ॥ अरुणः क
 वरः ॥ ति वदिनयः ॥ सर्वे अगुणापुमधनः ॥ ति वदिनयः ॥ सर्वपापवन्मनिदहनः ॥ ति वदिनयः ॥
 सर्वे न अगतिमिहः ॥ ति वदिनयः ॥ किमिति यश्च यत्रिहानं यमहावाक्कुलः ॥ अगनमालिन्
 पुद्वारिकुलः ॥ ति वदिनयः ॥ कलुषा अत्राशेषातिहसर्जनं गगाधिपेता यदि न यथासर्वं अगनकायः ॥ ति वदिनयः ॥

॥ अथ च ददं योऽसि क कृत्य सर्वमधिष्ठाय रुक्यति ॥ यद्यदप्यन्यत्समयममदायाधिसुपुः ॥
 महती दृष्ट्या ददनाम नूरुगि ॥ सनपति अजलापत्राय लाजपति सलममदा नमस्कृत्य नाजं कर्त्तुमि ॥
 अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥
 अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥
 अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥

॥ अथ च ददं योऽसि क कृत्य सर्वमधिष्ठाय रुक्यति ॥ यद्यदप्यन्यत्समयममदायाधिसुपुः ॥
 महती दृष्ट्या ददनाम नूरुगि ॥ सनपति अजलापत्राय लाजपति सलममदा नमस्कृत्य नाजं कर्त्तुमि ॥
 अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥
 अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥
 अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥ अथ नां स नमः प्रियोपद ॥

मन्त्राणां पुनर्पुनः नानां नवः प्रथमं प्रदाय निःसृज्य अग्नये नमः ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 ॥ गीतगता कृता भगवते नमः ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥

२९

यातु तस्मात्प्रसक्तं सप्तमं नवमं दशमं अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥
 अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥ अतिथि नवा ॥

मिदं वचनमब्रुव। पत्रिग्रायस्व महासत्त्वाभाय या सा मरु रया न॥ अथ खलु स ता क्रीद द वि
 ला मरु मति न य नि जा वि क ली रता मि द म्म य न म्म ओ ता मो रे मा रे व नि जा र व को पी न ता व
 न॥ अहं वा भा य यि ष्या मि अहं नो इ इ ४ य म ह म हा ल या न॥ न ता पी ज म न सा ल ता व नि ज २ द
 ये य ब्रु व न्॥ कि म न म हा स त ब्रु हि नो पुं म वि यु नः या य ज्ञो वि न म हा कं ॥ त त्पु ल वा न म
 हा म न॥ क थ नं ज्ञान मा हा मा प य त्वा के क नि ष्या ते सि न नः॥ स य च ति क ष्या मि ता मि द्वा म्

२१

दा क र त्॥ अथ स म म हा वि द्या पु ति स त्ता म वि द्या ता॥ म द नी र व इ वू ना म हा य ल प ज क मा॥ न ना हं म
 च वि ष्या मि अ ना इ ४ य म ह न्नु वा म॥ न नः स म हा सा थ वा द न ह्य मि ता या मि मा म्म पु ति स त्ता म हा वि
 द्या मा ह्नी ति मि ता थ जा गु र्ग ज पि तां क मा ति स्म॥ स म म न न थ ज व जी पि ता र्ही म ह्या म हा पु
 ति स त्ता यां म हा वि द्या मा ह्नी स व उ व न मि दि ता क थो न म क क्ता ली र नं प ॥ नि ता न स त्ता
 मा म नु म न हा क्ता म ति क इ य तो र्य पु जं क र्ता मा ज्ञाः॥ न य ति मि दि ता ॥ ह्य उ ये म हा पु ति

स्रजार्थं मम हा विद्या याज्ञा मनु रूय न द रु मा नाः पुनि स्रज विनाः ॥ विलग्न मताः न ते च सार्थ का स्र
 म हा नार्थ ना हति तत्र दोष प्राप्तिः ॥ इति । स्नान यती यं म हा विद्या म हा पुनि स्रज सर्व न अगम
 धि वि ना त न द रु मा म हा वा क्त ॥ म हा विद्या निरव्या ना ॥ न स्ना द व ह्य म ये य धु जा ग म य जा पि ना
 दु ह्य अत्र यि न या ॥ सर्व क न सी ना का ल म य वि द्य द हानीः पु न मे यति । सर्व द व म नु र्ण य
 वि श्रु ह वि वा द ष्प ति प्रा य यां ते । सर्व दं न म सा क ज ल र या स का ना ना वि वि ध र्प ॥ ४ ॥ ह्य वि नाः

२४

अ का न पु रु षं नि ॥ पु न म ग द् वि । सर्व च द ष्प ति ह्य म र्ग प कि डं ति ना वि व ह्य कि न त र्ही नि च पूर्ण द
 ल य न य ला ष धि स ह्य दो न्य रि व द न । म न सा नि ह्य इ नि मृ द्म मि य र वि ष ति ॥ स ह्य ग व प ति
 पा वि ना न रु वि ष ति । अ नि व द ना द रि दा षाः सर्व षा सर्व म र वि ष ति । का ल वृ ति र वि ष तिः
 ना का ना द रि ष ॥ य च न रि म वि ष य म हा ना ग म स ह्य र । व का ल न का ल व र्व अ त्र म सृ ज ति ॥ यः
 सि दि ष य न् य वि द्या न स्ने म हा पु नि ह या ना म पु च वि ष ति ॥ न तु तैः स ते स्ने ला य र्जं सं ह्य जं

अत्र हि लघेः अस्वर्गुमालिखितपाणिप्रांतिपत्र नि । कदाच जा जातु शौर्यचनकजन खा १ न
 पुयकं तेन यथाचिन्ति न मा तु त्वसर्वजाचनकजना मां सर्वसुखसमर्थि कामद दा कि । कदा नाथ
 मा दानि पूजा सत्काजालि कजाति निपुण ह ना ३ नवपुत्रमिति ल ह न ४ संधो ज्ञाना न भग २८
 त उ अनापुत्र न ५ पूजा सत्कार्यार्थ कृ ल मा ज द ६ म ह नि य पूजा सत्का लिक जाति द्या ना नि य द
 दा ति । उ प्र क स म्प य स ति । म दानि वे प् आ नि क ति । अ को ल भो य ना नि द ना नि द दा ति न

[illegible]

20

[illegible]

[illegible][illegible]

三三

पूर्वप्रतिष्ठातवतीयंमहात्राक्रममहापुनिसृजामहाविद्यामाह्वीसर्धविप्रविनायकानांविधुस
 यितीयमयचरुगवनिपुलपुद्गलितवदनकजजतजलाकृताग्रहिपुलासस्थिरुनजाजानामन
 थागनाहसस्यस्यं॥६॥पुथमारिहायुहायनमाधिसंस्तुतुनापसंकानिउपसकुमासर्ववृह
 पुलाहं॥धर्मचक्रप्रवलयैनुकाजसुकाहयचरुगयन॥८॥समाजे॥सपत्रिकेत्रनेकमात्रकाटी
 निखननसहस्रप्रतिवर्केनाजमयहेमवदलमाकुले॥६॥वहविदिर्धधमात्रविषयविकुर्व

नामहाय प्रसादधानि सिद्धवन्मगजविहारी रुक्मिणी अहिपति ही नाना वृत्तिरुनवतम जाकुमाः पु॥
 लक्ष्मिदेविका ४ ममनाप्रपत्नी नामति न नारुगव ना धर्म उदं पु वरि नय थ भोयू हे रुगवा इमे
 ति न सर्वविद्युति नायकान्मा जः प्रपापीयां सा वि धं स यि ला लीन शार्पात्रं र्गन नः तिरा नयेदि मः
 हा वा प्रसादवत वगवाहि पात्रमिना यो फा ॥ यं महा पुति सजा म हा विद्या जा कुी सत्र लमा
 नं न सर्व व ह न रु य र्गन व स पति भा य यति ॥ अजय पति लडा सत्य नाना न्द्रु र्गन स न ग

३७

३८

साहर्दि म हा वा प्रसादविद्युति म कान्मा जलमाधौ हा म न सिका जल म न सिक र्गन ॥ सर्व का ल ॥
 लिपि ला का य कन्तु गता कृत्या धात्रयि न का कि मि ति पू र्गन व कु य ना ॥ उज्जय न्नी मी हा न गयी ना
 अत्रु म द रु स विजित क न वि ल्प र्गन ला य ना यिः कृ तः सत्रा जा वु म्म द र्गन न व ध क पू र्गन
 ला अत्रु म्म ग रु न्द्र व न्द्र नं पू र्गन जी वि ना द्वा प ना य प न ॥ उध नं व ध क पू र्गन संत्रा कुा फ म्म
 र्गन गृही ला प र्गन विद्युति न ला अर्हि का आदि वृत्ति संत्रा पू र्गन जी वि ना द्वा प ना य प न ॥ उध नं व ध क पू र्गन

पुरुषः। मं म हापुति सजा म हा वि द्या म ह्री मान हा म त वा वृति म ह्री द कि ल वा हो न दा हो व द्वा धा
वयति स म म हा स त स म हा म हा पुति सजा म हा वि द्या याः प रु थ ना सि त क क सी रु तः र व
नु त लु य धा पा लु म हा वि द्यो लु ह्री ति । न त क व थ क पू र्ण धा म म व नि द्य य ता ह्री वि क ज ला
गो व या मा स शा न ना जा ज पु ह्री ति न द्य लु त नः क थ य ति । ग दं न लोः पू र्ण अ न्य त म सि न्य धि वो
पु द ल य क गु ह्री ति । न न व ह्री नि य क न त स ह्री ति पु ति । स कि पि नि ना न नि गु नी त्या क ज य न

३७

३८

त न स प र्ण वे धे व थ पू र्ण ह म हा य क गु ल यं नी त्या कृ ति नः । स म न न उ ह्री ति न सिं रु ह्यं य क गु
हा या न त क य क ४ स वे क क म न स ४ प धा वि ना मा न र्ण र क यं धा म र्ण ति । न न द्य क र ह्य म
हा पु ति स जा म हा पु ति स जा म हा वि द्या या अ न र व न न मू र्ण म क सी रु ना धि वं द दी पा । मा न
वि गु ह ह्री पा य स र्व न य क ४ स कृ ता द ह मा न स व जी प द्य ति । अ थ न य क वि स य न य न
रु स म र्ण ग ह्री त्या व दि द्या म म य ति त्या पु द कि स क क मा ज ह्री । या व ले व थ क पू र्ण ज ह्री

[illegible]

॥ अपि तु महाकाव्ये सप्तमस्कन्धे महाकाव्ये वा जगदीश्वरपुत्रोक्तं न विधत्त कृतं लिखितं वा ॥ अथ
सप्तमस्कन्धः ॥ इति वपुष्पसुप्तं नारद उवाच ॥ अमुं लोके नारिपुत्रं नाम वपुष्पमात्रं ज्ञात्वा को ह्यस्य
नरगणनिभस्तथाप्यमहापुत्रो ह्यमहाकाव्ये वा जगदीश्वरपुत्रोक्तं न विधत्त कृतं लिखितं वा ॥ रघुनामाह ॥ इत्युक्तं महाकाव्ये
तस्मात्तस्मात्सर्वसुखं सत्त्वं कुरुते ॥ यमसूक्तं ह्यस्ति न कर्मसु कदाचित् ॥ याचि
तं नाशमाहो यत्किं कुं तागुरुसमूहं ॥ रावेष्टानि च सत्ता तां दात्रि श्रुत्वा न हर्षं ॥ उपवासे

[illegible]

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ नानाविधविपर्ययालियथाकालयथाविधिः सर्वपु
 ण्यदत्तयो जगन्मूर्तिः अपि ह्यस्मान्नुताम् ॥ घृणामादि क इहोऽथ यावदेकः पातहादिरिः ॥ पूजयद्वातिदु
 र्गं नृपकृपाया नृमज्जलाः ॥ सुपथेऽनुग्रादिद्वयं मम धर्मकल ॥ संपन्नोऽयं जगत्प्राप्तोऽयं
 लघूगन्धपूर्तिनाः ॥ अतोऽयं किंलि कालाः पितादिना दृष्टव्यं किंलि ॥ अपेक्षुं जज्ञे कसूत्रं एव पश्यित्वा
 विद्वद्वा ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

हि मातनः ॥ १५ ॥ कलकनतिरिगवसुखेपि जाय इवावमुक्तं जवावातुक्तं यिन ॥ १६ ॥ तिरवन्मृष
जाथोसममृषा जायननेतमध्यायदात्रकंदुयाम् सर्वातं कारुषितं नतपुर्तु न्नापातुयाद सैनधज
यत ॥ कार्यपर्यनिषर्त्तु ॥ १७ ॥ पदुत्तिनविस्वमा ॥ १८ ॥ यामानेदात्रसुवर्तु ॥ १९ ॥ नानातवि ॥ २० ॥ षतः ॥ २१ ॥ इह
अपि कर्त्तव्या ॥ २२ ॥ अथ निरवत्ययेदि ॥ २३ ॥ कोविर्त्तसर्व ॥ २४ ॥ प्रतिसिद्धापिपुत्र
कारा ॥ २५ ॥ कविजात ॥ २६ ॥ यपि ताति कार्यानि सिद्धं नानु ॥ २७ ॥ ज्ञानानुपाय कर्त्तव्यमडादि

५०

५०

काव्यपमिनी ॥ २८ ॥ यप्रज्जयवाती निरवत्यपि पञ्च कालिरवत ॥ २९ ॥ यप्रनान्क थदुयाकं जजापिसमक त
॥ ३० ॥ सुपुष्टितममृषा नतदलुय इवद्वकं ॥ ३१ ॥ तिरवन्मृषा नतदलुय इवद्वकं ॥ ३२ ॥ सपज्जुपा
नंतथापप्रज्जयपुं समक त ॥ ३३ ॥ सारकं यप्रज्जु की तमवज ॥ ३४ ॥ यप्रनान्क थदुयाकं जजापिसमक त
विरुजमिति ॥ ३५ ॥ सर्वज्जयिथिचिन्ता निदात्रयदिचिन्ता ॥ ३६ ॥ वज्जयद्वालक्यालिसेतु विरुमुदया
ति ॥ ३७ ॥ यप्रज्जयवाती निरवत्यपि पञ्च कालिरवत ॥ ३८ ॥ यप्रनान्क थदुयाकं जजापिसमक त

मन्त्रः ॥ ह्यद्गजचुनिपापकाशादन्तनाशनाशने ॥ १ ॥ अथनादवप्रवन्नादवसर्धतः ॥ लण्ड
द्वियेताकाशउदकागिरयनकाशमृगयाजादकाशनागयाधयश्चकार ॥ २ ॥ नसर्वेनरुविष्मक्ति
सांविद्यासरापिना ॥ सर्वथासर्वसाजैकुण्डलवक्ष्यमित्तत्वं ॥ यजनीयारुविष्मक्ति सर्वसत्त्वात् ॥
साहेननामहाविद्याजोक्तेमहाविष्मक्तिराजाशक्त्या ॥ ४ ॥ सर्वसाधना ॥ ५ ॥ अथनादवप्रवन्नादवसर्धतः ॥ लण्ड
सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥

यद्वाजातय ॥ १ ॥ अथनादवप्रवन्नादवसर्धतः ॥ लण्ड
द्वियेताकाशउदकागिरयनकाशमृगयाजादकाशनागयाधयश्चकार ॥ २ ॥ नसर्वेनरुविष्मक्ति
सांविद्यासरापिना ॥ सर्वथासर्वसाजैकुण्डलवक्ष्यमित्तत्वं ॥ यजनीयारुविष्मक्ति सर्वसत्त्वात् ॥
साहेननामहाविद्याजोक्तेमहाविष्मक्तिराजाशक्त्या ॥ ४ ॥ सर्वसाधना ॥ ५ ॥ अथनादवप्रवन्नादवसर्धतः ॥ लण्ड
सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥ सर्वसाधना ॥

निप्रले कवृद्धा ४ आवकाय मरुतं नया ४ अथ च वद वि धा लया द क वा नागम महर्षि
 ॥ अत्रा कर्त्तव्ये न श्य म अहि न क श्य नि लः ॥ अथाः मुच न म नै ल वि वा ना श्रान का रु म ॥
 निरु शा हा मि सर्व तु ॥ अथ च निच कु वी न् ॥ ५ ॥ अथ प्रो र्क म वि अथ उप स ग ॥ सु मा र्त्त ॥ ५ ॥
 वा धि पृ ष्ठा म हा वा मा ये शु क्रा ज य द्यु न् ॥ अथ च व द वि धा नाग म ग न्ध र्त्त ग वि च धि का
 ॥ अथ च द अ ल य च ग स न मा नू षी पु जं त म नू षा न् ॥ अथ च द र का य ह द र्त्त ॥ ५ ॥

५५

५६

सवे न वि पु ल न् ॥ नि प्र क्ता य म हा व लः ॥ अथ च कृ त त्र क्ता म य थ पा फा वि स य न् ॥ य दि शु क
 का ल पा हा न नी त न् ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥
 य धा य म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥
 अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥
 अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥ अथ च म हा व ल यं ॥

४॥ विष्णुसन्निधौ चिरकालाद्विलयगताः ॥ कथं ॥ ॐ गिपि रगिपिलो रगिपि वनि । गुणव
 नि । आकाशवनि । आकाशविष्णु हं । सर्वपापविनाश ॥ आकाशगगनतले ॥ आकाशविद्या
 जिलि । मनिधविजिनि । कृत्स्निलिखन । मनिमूला स्व विनमालि ॥ ५॥ सुकेश । सुव
 ॥ ॥ सुवकु । सुननु । सुवर्णलम्प । अतिन । अत्यन्त । अनागत । पुत्रसन्तानमश्व
 षो वहा नंदालि नैज सा । वहासुवहा रगवनि सुजकनि । अकथ । सुकथ । सुकम । सुप

५०

५१

॥ सुदम । सुदाम । सुवर्ण । वन । वनक । पुत्रवतरुगवनि । रुडवनि । सुरुडवनि । रुड । सुरु
 ड । विमल । अयलुड । चनिपुचलु । चनुवजलु । मदावलु । धात्रिगचात्रि । लम्प्री । मा न
 ज्ञी । वज्रसि । सुमति । प्रकृति । सुमुखि । जवनि । जवनि । जंकवि । डविठि ॥ डविठि । जदि
 सि । सर्वाथल धार्मि । पुत्रमार्थसाधनि ॥ रुनरसर्वज्ञानुदरुसर्वदृष्टानुपुनपि ॥ च
 आदिनीमन्त्रा मन्त्राणां पथरुदयं रविधंसयजीविते ॥ सर्वदृष्टाग्राहानां नयसर्व

॥ वा-कृतिशायानदनावायः कालिन्सकृदुवाति ॥ द्वायालर्जवकाथा ॥ यनलिरिविषाति ॥ लिरवापये
 षाति ॥ धत्रयिषाति ॥ वाययिषाति ॥ तीवलासनसारुवयिषाति ॥ पत्रल्ययिषाति ॥ प्रलसंप्रकाशयिषाति
 ॥ तस्यमहावाक्कलज्ज्वलकालमजलाति सर्वधनप्रतिप्रित्तवाति ॥ नवायकायमहावाधयारुविषाति ॥
 ॥ नवायकायमहावाधयारुविषाति ॥ नवायकायमहावाधयारुविषाति ॥ नवायकायमहावाधयारुविषाति ॥
 नलित्रोर्हि वा-कादि कदाहिकः साहिकयाकुर्यकसापुदि कावा द्वाजनकायस्यकुमेषांनि ॥ सस्म

ननुवसरं सति नासापिनि ॥ स्मृतत्रयविवृधतः ॥ महापतिनिर्वातलालोरुविषाति ॥ स कृत्स्नरुधमलाम
 रुदेस्यर्य ॥ अधिगच्छति ॥ सत्यं गुर्यग्रात्यघन ॥ ननुतनुजा नोजनोजति स्मभारविषाति ॥ सर्वसत्यानां च
 पिथारुविषाति ॥ वदनीयवृत्तनीयस्यसंपूर्णसारुविषाति ॥ सर्वजनकतिर्यल्लानिगतिगदनपुनप
 पालि संस्थपयिस्कारुविषाति ॥ यथावा कर्मसुलज्जिस्मिदि ॥ यत्तपति ॥ सर्वसत्यानां तथा क्लाननजम्भावे
 लासकजारुविषाति ॥ यथायदमनुत्तममृत्तनपुरुवना सर्वसत्यानां कायं प्रकादयति ॥ तथायं धर्मसु

मांश्चलरुत सर्ववर्द्धवयाय धामपत्र उतामिद्यामन स्मयन् ॥ पर्व नो लरु न लीघु मु
 जनम्या नमूह सं । कर्मणा मनसा वा ज्ञाय कृतं पूर्वजन्म जन्म ॥ असुरं हवि धं किं चिरु स वं कृप
 सि धति । स्मयन्ता द्वा यला ध्वे व उरु हराणा ज्ञेयना दधि ॥ य ० ना द्वा य ना धु व ज प ना त्य ज द ल ना न ॥ ए वि ष
 स्य वि य ला सो सर्व धर्म गति ज्ञ न ॥ एवं धर्म ज स या फ पा या ग द्वा ति सै द्वा या ॥ स ध न सर्व का यो सि मन
 सार्य द्वा दो पि न ॥ सर्व मृ त्यु य स मा ता पा न स्य रु वि षा ति । या जा गि र्क द क र्क व वि द्वा न स ल

७३

१३

जायि वा ॥ यद्वै साग्रमकलकीकाड विपुलाय यदा नू ला शा न स वे प्र लयं या कि विद्या या ल क्क जा प नः ॥ वि
 द्या मि मां य जां सि षा सर्ववर्द्धे दि द्वा जो ता ग को र्क मा ना न सि द कि द्वा धि स मु ज प य य ता स वे व् य य स
 न व् र्म मि द्या म्पु या ज न ॥ या नि व क्क कि कर्मा सि स या यार्थ प सि र्दु य ग सि द्वा न्ना य त न हा नि वि द्या न
 ना तु र्ग ज यः ॥ नमः सर्वत थो ग न सा य ति र्दु र्ति द ल स दि द्वा ॥ उ म नि व ज द्वा द य व ज मा ज स न्ना वि
 द्वा नि लि ॥ ह व र सर्व श क्त्र क्क म स ल जी यं सर्व सत्ता य व ज र व ज ग र्ग ज ला य र सर्व मा ज रु व ना

सिंहसमथरुगवन्मरिदू संश्रुमागलनवा ॥ १ ॥ जानलकुलावेकहीपूठ लसं कुनागुउक ॥
मोगानिनायंनित्योवजपिपुपाठजय नासनगानपुखय रेषषपयिक्तयेः न नखनूपनः । सम
धेनवेमात्रांमकागयमहा नू नूमिवा लला रुकगु कू ट यर्ष्यया इहं नं नरुनी याका लव
गाजनिर्मरुमद्यससुनि नौ द वा स र्ज नं गु ठ गु का य नं ॥ १ ॥ वेद्यु न स्थानि स्थु न किं द द
दिगस्थ कही रुनासु मा न्वे का न स्थ पा इ न रु न् वा न रुना नि य न रा व र्क वा य ड स यो पु रु व न्

७०

कसुमासिन ॥ सर्वदलीय सर्ववादिपुमर्दन ॥ सर्वसंलययु क्ताच सर्व ला क वि ना य क ॥
चक्र ४ षट्सहस्रालि क्क मु न्द्रा ४ पु न पू न रु नाः ॥ निष्ठा य द किं ला दि ली पी उ य नि न दू रु वा नू
न वा न्द्र मु ल्प ण षा मि ला क ना थ स्य से मूर्ध्व ॥ स्या द्ध थ दं ॥ ला नि ॥ म्हा ला य नि ॥ का नि का य नि किं
क सि । सै किं य नि ॥ किं क सि । किं य नि किं य नि । ध य नि । ध य नि । ध य नि । ध य नि । ध य नि ।
ध य नि ॥ हि स य नि । धा नि य नि ॥ ग ल रि ॥ स य मु म स स प रि वा य स्य सर्व सत्ता ना रु द किं ला

यादिनि स्थाहा॥ पूर्ववदिहाति॥ दुसराय पण कुसुलो कपाला महे यजा ॥ यद्वाधियेनये ॥
वेहाजी। नीचपूठिका॥ ठेसंपूर्णस्वर्गं अथपुनितु न कुसमाहर्नि। योथल नैजसा नैजा
हर्मिस्वर्गदलनय॥ निहना ॥ सर्वजागम्यसु सुसुमसपयि योजय सर्वसयाना ॥ सर्व
यापडवापदरा ॥ ४॥ स्थाहा॥ नमस्तु पूज्यवो जेनमस्तु पूज्यारुम ॥ नमस्तु शिखर
धर्मजाजनभाकुम ॥ विष्णुकाससाजाजगृहीत्यो ॥ शिखरिनि ॥ यमस्तु मयहा सिंद ममहा

देवतामिडादोऽथ कुयमिंस्वत्वात्तथ महाजाजनभाकुमहाजाजकारिका ॥ देवा ॥ अस्मादेवम
हायकु सनापजयः ॥ द्वाविंशर्षु पुमराय कानय द्वाजी नीचपूठिका ॥ सपयि योजय अति कानय
नवर्षु अति कानवर्षु योजा कानवर्षु गृध्रकटपर्वन सुकनवर्षु नूला वनादाय लंघलास
नावरास नावरासयने रजवास्तनापहं कुला रगावेन ॥ पादोऽपि अस्मादेवमि
नकावाला कस्य जल कपदन रगावेन गायत्रिपद ॥ ३॥ दोक कका अति रासपूर्व वदपल

स्वयं ४५ श्री वैष्णव लव दोन वल्लभा नामा कथा कृता सिद्धिदाना विष्णु कर्म लुनी नागपत्रा कृमः। य
वी नावा हवर्ग स्थानि स्तुतः ॥ ५५ ॥ चडा वायिम लवा मिन कृत्तु रिः ॥ ५६ ॥ पूरु कृत्तुः ॥ मधु
५७ व के संच सल कृत्तु ॥ ५८ ॥ सर्म ल कृत्तु ॥ लो क ४ स व को कृत्तु ॥ ५९ ॥ प्रण साग कः ॥ मनुष्याणा
दिना धर्म यत्र काल रय मिः ॥ ६० ॥ मरु साह गुप्ता म द न सूर्य सर्व व ६१ ॥ यु का डि न। आरु कृत्तु
उपर्य न सो मा व च न मू ल म ॥ न म लू पूरु वी य न म लू पूरु वी ल म ॥ ६२ ॥ कृत्तु अति न म स्या मिध

मर्म ज्ञा ज्ञा म लू म ति ॥ ५४ ॥ र ग वा मू कृत्तु लू म मा मया धि वा य च त्वा यो म हा ज्ञा ज्ञा नाम कृत्तु मा म
५५ व म हा ज्ञा ज्ञा नः ॥ ५६ ॥ निरु प य कृत्तु लू द ॥ ५७ ॥ मू य व द वि ह ॥ ५८ ॥ यि न वा म न्यं न ॥ ५९ ॥ न क र द
ना यि ना दि मी नू य लो क वृ द्वा त्या दा धर्म स्या य न न च संच सूर्य नि प व न च ॥ ६० ॥ द म स हो ज म व
गो य वृ द्वा र ग व म लो क र त य द न ॥ ६१ ॥ क वृ द्वा र न ॥ ६२ ॥ व का म्या मि लो क कृत्तु ल मू ल
त्यं व न य स द स नो द्वा गिं ग न न व नि का या नाम लू य द व नि का य र त य द न ज्ञा ज्ञा ना यि र व

मां यव स मका द जालि (म) त्रयान राज ना नि मार्ग य नो पु प ला य मा न मो य उ च द न क द यि का नं
 ज न ग र्म न ना नि र्म ल नि ग ना नं म पि च पु णि ना मा आ द न नि दि २० य कि वि द य कि मा न य कि
 जी ठि मा द य य कि न व य म् इ न रु ग दं नो १ कि क र्म रु ह्य पि द द य म् नः स क स का ना न य व
 दां ना प ल क्क नी द ज यि णा नि ॥ य याः प र्य वा य म् हार ति णा ति । न न क ह म न ज ह्य दा न य ह
 पु नी मा क रु वा । आ नु न स र द ह न न स म द ज ज स ना म न र्म ना र्ग र्म ध ध या अ पु ध य गि न

४

या ४ पु या व की ल् ध न णी क र्म ला दी य आ दी य न रु चे ल यू ज क र्म वा न दो य रु द न रु ग व य र्म
 वा य न रु ह र्म ही न स म् द द नी य प ल क्क नी । रु ह कि रु य न नि र्म प ल य अ वि दू य कि । नि डा ज कि
 ज न न स स ला वा र्म प जा य न । इ ध स पु द्म न नि र्म न रु ज न न अ वि मि ॥ ज गी पु रु र्म मा य नो
 व य न रु न न स वा ॥ न रु म नु प द न य कि ला क ना थ स ला दि म ॥ ला द य दं सि द्ध । रु हि द्ध । स र्म
 न रु ज । अ न ल । व ल । ज म् । क र्म । ज टि ल । अ व न । म र व न । स र व न । व न । व न ।

सि न स र्ष पा नू ॥ धृ म म ल न सै य क्का पु क्क य वा द न स न ॥ कं सु उ दु क्क नु दि क्क पा च
व नू ल द कं ॥ या दि कि य त म क्क य पि ई दं ग्ग ता स स पि नं ॥ रु व नु द्वा लि न ४ स र्ष य थ
ह म्मि ध न स र्ष पाः ॥ क क म क्क न न ल प्पा नि य क्क द ल न न र्जि नः ॥ क पा न कि ण पा ज प
म हा र्जि म्मि ग ॥ रु वि य मि ॥ चि तु उ पा रु वि य नि य क्क मा र्जि ल ल यी ति ताः ॥ अ उ क
व नो या उ धा नी ग क्क नि क दा य न ॥ नि व ल न त्र प ष्ठ नि क्क व न स य ज हि नः ॥ आ स न

न ल प स नि रु न सं य स मा ग म ॥ अ त्र पा न न व हि ता ज य क य क्क म ल न ॥ म ल सा ह म्म पु म्म
म द न स र्जं या य क्को ना न व र्क न ॥ न स व ज ध नः क्क क्का म्म द्वा न नु म्म द यि य मि ॥ क क
जः क्क न्ना थ ए नि क्क न स द क्क स मी ॥ मी क्क ए य स ल मि ए क ल न ल अ क्क स मि णि य
पा ट य मि च क्क ए क्क न्ना थ ए म क्क कं ॥ ल द म्म म्म ज की ल न न द यं या स यी उ थ न ॥ म्म य
न ॥ अ व न वा स य य म्म म्म ल णि म्म ॥ वि द्वा पा ल न द ल न स दा स सा न गी मि न ॥ न न वे स स

विष्णुनि संसायवकुमलुले ॥ श्रियाविकुमलुले ॥ धर्मसत्ताहसत्रदाः
निवन्तु रुडयी ० क ॥ ५६ क अजाकुमलुले ॥ यौदद्वि एविचरकः पत्थिमनविचपाकः
कुपेज (५५) रुजौदिल ॥ जाकु ससार्गकानां दिद्वलना नजसाहिया अजुनजीक कदाज्जहाः
सर्वकुदिसमेज्ज ॥ वजासननिषद्यहविमानयुक्ता निर्मि मं चानोवुक्ता मरुतु मरुतु
पुत्रालिम्बनमसागि ॥ सुवन्तुयव्व ४ श्रीमान्वाहिका अनसत्तिरेरुः ॥ पत्रपूषव इभ

सिद्धः ॥ असायवपूषाधिनः ॥ पूरुचउवविर्वायिनकृणपयिकानः ॥ सुवन्तुयव्वका अनल
कली मूनिजावृ नः ॥ समुत्पाकपुत्रा नं वृत्ताला कयिनामरु ॥ पूत्रनाला कनाथ स्यात्ता कपा
लानथावुवो न ॥ नयाकेला कपा लाना मयव दाना नूला सनं ॥ २० नावृद्धा र्जिदिजायकृव
द्वाः ॥ पुत्रकजो जूयि ॥ २० मय्यमवकात्यलि दवा ॥ अयिसमृद्धिना ॥ जायकृवृत्ताले न
वृत्तकृवदवायमः ॥ अययममरुतुः ॥ २० मय्यमवकात्यलि दवा ॥ अयिसमृद्धिना ॥ जायकृवृत्ताले न

द्य वेदाय संगमावू ॥ न न ग्राह्य जानः प्रकाश रुतमनुत ॥ पूषा पृथु मदी कृत्वा दुर्लभा वि
दिजन्मये ॥ यद्विजाय धी धदिगत्त स्रुत नाभक थापि च यद्व सनाय मो स वा न प्रपथि त्वा च
कुदिगः ॥ आभ र्य मर्व रु गानि याव नो स्मा रु मादि जिमहा साद सु पु म द नं हं न स स्था रु
मूठ मी मू रु मं ॥ यु क्त लो क स मू दि ना स र्व द यो वि नि जि नो ॥ म हा सा द सु का य न म दि
मा य रु र्ज ज रु सा ॥ १ ॥ त्वा वा यो कू व ज स य रु क स ना य नि ग नः ॥ वि क म न स य रु

५५

५६

दि कू था ज व नि गु रु का ॥ ४ ॥ जू वा विंश च रु ता नि गु हा ग न र्व जा मू न ॥ पू ज सि म दि
ह म रा ल रु न सं द्या ४ ॥ १ ॥ न्य रु मः ॥ स र्व न मू ठ पा ल न य ये व नं ॥ न न यी डि नाः ॥ जू वा
विंश च रु ता नि गु हा मू नः ॥ द क्ति ला सि दि ह म रा ल रु न सं द्या ४ ॥ १ ॥ न्य रु मः ॥ स र्व न मू ठ
पा ल न य ये व न न यी डि नाः ॥ जू वा विंश च रु ता नि रु कि ना ग गु हा मू नः ॥ य न्ति म सि
दि ह म रा ल रु न सं द्या ४ ॥ १ ॥ न्य रु मः ॥ स र्व न मू ठ पा ल न य ये व न न यी डि ना ॥ ४ ॥ जू वा विं

॥ अत्र रत्नानि ललितं यत्कृत्वा मूनाः ॥ दिग्गजान्तरं प्रकाशितं न संद्या ॥ ३५ ॥ अत्र मः ॥ स वे म मूनाः
 याहानय अत्र नयीति मः ॥ अत्र मूनाः यत्र स संजयाननवाहन शापाद मूनाः नये वयम्
 कृत्वा गाथां कौटयं ॥ अत्र मूनाः नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम्
 नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम्
 विनये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम् नये वयम्

धर्मरत्न ब्रजचार्म सुरत श्री महाविहार

ॐ
 २५९